Volume-08
Issue-12
December-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]
https://doi.org/10.53573/rhimrj.2021.v08i12.012

भारत–चीन संबंध–वर्तमान बदलता परिदृश्य

डॉ. जितेन्द्र कुमार बैरवा

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 December 2021

Keywords
सामरिक, रणनीतिक, आर्थिक, कूटनीतिक।

Corresponding Email:
jitendralaxmi.jpr@gmail.com

ABSTRACT

एक अप्रैल 1950 को गैर समाजवादी देशों में से भारत पहला देश था जिसने नए चीन के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किए, इस प्रकार से भारत और चीन के बीच दोस्ताना संबंध का एक नया अध्याय लिखा गया। तब से ही एशिया के दो विशाल देशों भारत और चीन के बीच संबंधों के नए युग की शुरूआत हुई। वर्ष 1950 से 1958 तक, भारत और चीन का संबंध दोस्ताना 'भाईचारे' का गवाह रहा है जबकि दोनों देशों की धरती पर 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' की गूंज सुनाई दी। हालांकि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि भारत–चीन के बीच संबंध 1959 के बाद तिब्बत के सवाल पर और भारत–चीन सीमा के सवाल पर मतभेद के कारण बिगड़ गए। कई अन्य जटिल कारक जो कि अंतरराष्ट्रीय और आंतरिक दोनों ही स्तरों पर मौजूद थे ने 1962 में सीमा संघर्ष को जन्म दिया और दोनों देशों के बीच यह भिड़ंत अगले दस साल तक निरन्तर चलती रही।

शोध विस्तार– भारत–चीन संबंधों पर यदि इस तुलनात्मक विश्लेषण को लागू किया जाए तो यह दोनों देशों के बीच दाँव पर लगे सारे मुद्दों की व्याख्या कर सकता है। चीन की धूर्तता, खाली क्षेत्रों को भरना, सामरिक घेराबंदी, शत्रु के सामरिक सामर्थ्य को विफल करना जैसे शब्दों से परिचित है। चीन जिस चालाकी से भारत की सीमाओं पर चोट करता है, जिस प्रकार यह उन क्षेत्रों पर घुसपैठ करता है, जिन्हें भारतीय नेता खाली या अचिह्नित बताते हैं, और जिस प्रकार चीन भारत को रणनीतिक विकल्पों को छोड़ने पर मजबूर कर देता है, उससे साफ हो जाता है कि भारत की घेराबंदी के लिये चीन किस प्रकार **वेई–ची** के सिद्धान्तों का पालन करना रहा है।

भारत चीन सीमा विवाद की शुरूआत उस समय हुई, जब सन् 1954 में चीन में छपे कुछ मानचित्रों में बहुत बड़े भारतीय खण्ड को चीन का भाग दिखाया गया। अक्टूबर 1954 में भारत द्वारा चीन का ध्यान इस ओर आकर्षित करने पर चीन का स्पष्टीकरण था **'ये पुराने मानचित्र हैं, जिनमें समय आने पर सुधार किया जायेगा।'** भारत ने चीनी स्पष्टीकरण को स्वीकार कर लिया, किन्तु अप्रैल 1956 में चीनी सेनाओं ने उत्तर प्रदेश के **निलांग क्षेत्र** में प्रवेश कर भारतीय सीमा में अतिक्रमण किया। इसके छः महीने बाद ही चीनीयों ने भारतीय सीमा का उल्लंघन शिपकी पास को पार करके किया। इन उत्तेजक कार्यवाहियों के बावजूद भारत ने संयम का परिचय देते हुये चीन को सिर्फ विरोध–पत्र भेजा।[1]

सन् 1988 में तत्कालीन भारतीय **प्रधानमंत्री राजीव गांधी** ने चीन की ऐतिहासिक यात्रा की, पंडित नेहरू के बाद चीन की यात्रा करने वाले राजीव गांधी प्रथम प्रधानमंत्री थे। वहाँ उनकी अनेक नेताओं सहित वयोवृद्ध चीनी नेता **डेंग–जियापिंग** के साथ वार्ता हुई और इस प्रकार शीर्ष स्तर पर राजनीतिक वार्ता का नवीनीकरण हुआ। यद्यपि सीमा विवाद के हल व सम्बन्धों के सामान्यीकरण की दिशा में कोई ठोस उपलब्धि हासिल नहीं हुई तथापि सीमा विवाद को सुलझाने के लिए एक संयुक्त कार्यदल के गठन पर सहमति बनी, ताकि दोनों पक्षों को स्वीकार्य एक उचित व अर्थपूर्ण हल ढूंढा जा सके।

दोनों देशों के बीच सीमा विवाद को सुलझाने के लिए 1980 के बाद अधिकारी स्तर पर 15 बैठके हो चुकी हैं इन बैठकों में मध्यक्षेत्र के कुछ नमूना मानचित्रों के आदान–प्रदान के अतिरिक्त कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी। सीमा निर्धारण पर विचार करने के लिए विशेषज्ञों का संयुक्त कार्यदल भी बनाया गया जिसकी भी कई बैठके **(1988 से 2003 तक 14 बैठकें)** सम्पन्न हो चुकी है। भारत–चीन इससे पहले वास्तविक नियंत्रण रेखा की पहचान करने के लिए **(अपने–अपने दावों को अलग रखकर)** मानचित्रों के आदान–प्रदान की दिशा में आगे बढ़ना चाहते थे। **(पश्चिमी व पूर्वी सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कम से कम आठ स्थानों पर गहरे मतभेद हैं)** ताकि इसे लेकर कोई गलत फहमी न रहे, बाद में जब दोनों देश एक–दूसरे के भू–भाग के सम्बन्ध में फैसला कर लेंगे तब अंतिम तौर पर अंतर्राष्ट्रीय सीमा का निर्धारण किया जाएगा।[2] दोनों पक्षों ने नवम्बर, 2000 में वास्तविक नियंत्रण रेखा के मध्य क्षेत्र के 554 किलोमीटर टुकड़े के मानचित्रों का आदान–प्रदान किया।

सीमा विवाद पर अधिकारिक स्तर व संयुक्त कार्यदल स्तर पर की गई वार्ता की प्रगति की समीक्षा के बाद यह महसूस किया गया कि इस अवधि में राजनीतिक स्तर पर बातचीत की आवश्यकता है अतः सीमा विवाद के समाधान में तेजी लाने हेतु दोनों देशों ने अपने–अपने विशेष प्रतिनिधियों की नियुक्ति की। भारत की ओर से **रक्षा सलाहकार बृजेश मिश्र** को यह कार्यभार सौंपा गया तो चीन की ओर से वरिष्ठ **उपविदेश मंत्री ढाई विंगुओं** को इस कार्य हेतु नियुक्त किया।[25] यह भी तय हुआ कि

किस प्रकार भविष्य में राजनैतिक आयाम स्वीकार्य होंगे और इसके लिए कुछ मान्य सिद्धान्तों का रूपांकन किया गया जो इस बात का प्रमाण था कि विशेष प्रतिनिधियों के बीच वार्ता सार्थक दिशा में चलेगी। 2003 के बाद दोनों पक्षों के विशेष प्रतिनिधियों ने अगस्त, 2009 तक 13 दौर की बैठकें सम्पन्न की है और अभी भी वार्ताओ का क्रम जारी है।[3]

2005 चीन के **प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ** ने भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान भारत और चीन के द्विपक्षीय सम्बन्धों में नया आयाम जोड़ते हुए दोनों देश सीमा विवाद का हल सिद्धान्त तौर पर खोज लेने एवं इसे शीघ्र सुलझाने पर सहमत होने के बाद शांति एवं सम्पन्नता की सामरिक एवं सहयोगी साझेदारी के लिए सहमत हुए। दोनों देशों ने आपसी सहमति से वास्तविक नियंत्रण में फेरबदल करते हुए सीमा विवाद को एक पैकेज समझौते के तहत सुलझाने के प्रति सहमति व्यक्त की। इस यात्रा के दौरान सीमा विवाद हल के लिए राजनैतिक दायरे और मार्गदर्शक सिद्धान्तों, वास्तविक नियंत्रण रेखा पर विश्वास निर्माण उपायों की प्रक्रिया पर नए प्रोटोकॉल सहित **12 समझौतों** पर हस्तार हुए।

नये प्रोटोकॉल के तहत् दोनों देशों की सेनाओं के बीच सम्पर्क और बढ़ाया जाएगा। दोनों देशों की सेनाएँ प्रतिवर्ष 2 बार अतिरिक्त सीमा बैठकें **पश्चिमी क्षेत्र के लिए स्पनगर गैप में, सिक्किम क्षेत्र के लिए नाथूला में** और पूर्वी क्षेत्र के लिए **भूमला** मे करेंगी। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर यथास्थिति को लेकर दोनों सेनाओं में यदि विरोध की स्थिति आए तो दोनों पक्ष तुरन्त अपने वास्तविक मोर्चों पर चले जाएंगे और किसी प्रकार का उकसावा या धमकी न देंगे, ऐसी परिस्थिति में दोनों पक्ष अपने सम्बन्धित मुख्यालयों को सूचित करेंगें, ताकि कूटनीतिक स्तर या सीमा सम्पर्क बैठक के माध्यम से निपटारा हो सके।[4]

विशेष प्रतिनिधियों के बीच प्रत्येक दौर की बातचीत के बाद औपचारिक रूप से यही कहा जाता रहा है कि बातचीत दोस्ताना, सहयोग पूर्ण व रचनात्मक माहौल में हुई है और दोनों पक्ष अगले दौर की बातचीत के लिए सहमत हो गए हैं। वस्तुतः सीमा वार्ता में **अरूणाचल प्रदेश** के **तवांग जिले** को चीन को देने को तैयार नहीं है। लेकिन चीन ने यह कहना शुरू कर दिया है कि तवांग में तिब्बतियों का दूसरा सबसे बड़ा मठ है इसलिए तिब्बतियो का (अर्थात चीनियों का) तवांग इलाके पर स्वाभाविक अधिकार बनता है। चीन आर्थिक आधार पर तवांग पर अधिकार जता रहा है, इससे प्रतीत होता है कि चीन स्वयं द्वारा स्वीकार किए गए निर्देशक सिद्धान्तों की ही अवहेलना कर रहा है। जब भारत के **प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह** चीन यात्रा पर गए (जनवरी, 2008) तो संयुक्त वक्तव्य में उन्होंने सीमा विवाद के **'उचित तर्क संगत और परस्पर स्वीकार्य'** समाधान के प्रयासों में तेजी लाने की बात की, साथ ही यह भी कहा कि 2005 में सीमा मसले के हल के लिए जो निर्देशक सिद्धान्त तय किए गए है चीन को उनका पालन करना चाहिए।[5]

सितम्बर, 2008 में सीमा वार्ता पर विशेष प्रतिनिधियों के बीच 12वें दौर की **बातचीत बीजिंग** में सम्पन्न हुई जिसमें दोनों ने परस्पर स्वीकार्य एवं तर्क संगत हल पर जोर दिया था। 13वें दौर की वार्ता अगस्त, 2009 में सम्पन्न हुई जिसमें भारतीय प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार **दाईविंगुओ** ने किया। अब तक कि वार्ताओं से कोई निर्णय या ठोस समाधान सामने नहीं आ पाया है।

चीनी पेट्रोल ने 13 जुलाई, 2011 को पूर्वी क्षेत्र में भारतीय सीमा की तरफ 200 फीट शिथिल चट्टानों की चढ़ाई कर तवांग के यगस्ते क्षेत्र में घुसपैठ की। यह भी रिपोर्ट किया गया कि 2011 में पश्चिमी क्षेत्र में भारतीय वायुक्षेत्र में घुसपैठ की। भारतीय सेनाध्यक्ष ने इन घटनाओं के बाद इस क्षेत्र का औचक दौरा किया। जनवरी 16–17, 2012 को 15वीं विशेष प्रतिनिधि बैठक आयोजित हुई। पहला तो इस बैठक में भारत–चीन सीमा मामलों में परामर्श और समन्वय की कार्य प्रणाली स्थापित करने का निर्णय लिया गया।[6]

18, 23 और 30 अप्रैल को फ्लैग मार्च आयोजित किया गया। चीन ने लद्दाख के दक्षिण पूर्वी क्षेत्र चशुल में भारत द्वारा बनाये गये बंकरो को नष्ट करने की मांग की। भारत ने दृढ़तापूर्वक कहा कि बंकर वास्तविक सीमा रेखा के भारतीय क्षेत्र में है। 5 मई, 2013 को दोनों देशों के बीच गतिरोध कथित रूप से समाप्त हो गया। उच्च स्तरीय वार्ताओं के बाद दोनों देशों ने अपनी सेना पहले से सहमत जगह पर वापस बुलायी तथा भारत चीन के बीच 20 दिवसीय गतिरोध समाप्त हो गया, किन्तु चीन ने 2013 में भारतीय गश्ती दल को रोक दिया और फिंगर VII क्षेत्र के पास वास्तविक नियंत्रण रेखा की ओर जाने नहीं दिया।

सन् 2014 में चुनाव के पश्चात् भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन का दौरा किया। प्रधानमंत्री के तौर पर यह उनकी पहली यात्रा थी। उन्होंने कहा कि दोनों राष्ट्र घनिष्ठ संबंध बनाने के इच्छुक लगते है, लेकिन दोनों राष्ट्रों की समस्या यह है कि वे 1962 में उलझे हुए है। 1962 का युद्ध और उससे जन्मी भावनाएँ दोनों देशों का पीछा नहीं छोड़ेगी, किन्तु इस विवाद के कारण दोनों राष्ट्रों के बीच संदेह बना रहता है। दोनों को शक रहता है कि वे एक–दूसरे के पड़ोसियों को उकसा रहे हैं उन्हें अपने जाल में फंसा रहे है।[7]

चीन कुछ दशकों से अपना रक्षा बजट लगातार बढ़ाता जा रहा है। अब तक भारत के रक्षा बजट से तीन गुना ज्यादा हो गया है। अमेरिकी रक्षा विभाग **पेटागंन** की सालाना रिपोर्ट में यह कहा गया है कि पिछले साल चीन का अधिकारिक रक्षा बजट **1360.3** अरब डॉलर था, जबकि भारत का रक्षा बजट 38.2 अरब डॉलर का था। चीन ने आधुनिक रक्षा उद्योग लगा लिया है और पाकिस्तान इसका सबसे बड़ा आयातक है।

वर्ष 2016 में **जी–20** शिखर सम्मेलन में **प्रधानमंत्री मोदी** ने चीन के राष्ट्रपति **शी झिंगपिग** से मुलाकात की। इस मुलाकात

के बाद दोनों नेताओं ने अच्छे संबंधों पर जोर दिया तथा कहा कि दोनों देशों के रणनीतिक हितों के प्रति संवेदनशील होना चाहिये। मोदी ने विशेष तौर पर इस बात को रेखांकित किया कि हम सीमा पर शांति एवं सद्भाव बरकरार रखने में सफल रहे। वहीं चीनी राष्ट्रपति ने कहा हमें विवाद के मसलों का वाजिब हल निकालने के लिए सकारात्मक तरीके अपनाने चाहिए।[8]

यदि वर्तमान तक भारत–चीन सीमा विवाद को देखे तो सीमा विवाद मुद्दे पर भारत और चीन के बीच वार्ताओं के **19 दौर** आयोजित किये जा चुके है। जिसमें नवीनतम वार्ता, अप्रैल, 2016 में भारतीय **राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल** और **यांग** के बीच सम्पन्न हुई। दोनों प्रतिनिधियों ने सीमा विवाद के शांति पूर्ण समाधान के लिए सहमति व्यक्त की। हालांकि अभी भी मानचित्रों का आदान–प्रदान किया जाना शेष है।[9]

ले. क. क्रिस्टोफर जेफर्सन के अनुसार **'मोतियो की माला'** चीन के भू–रणनीतिक प्रभाव के आक्रामक विस्तार की नीति का वर्णन करता है, जिसके अंतर्गत वह एशिया के दूर–दराज के बंदरगाहों तथा हवाई अड्डों तक पहुँच बना रहा है, विभिन्न देशों के साथ विशेष कूटनीतिक संबंध स्थापित कर रहा है तथा अपनी आक्रामक शक्ति का विस्तार दक्षिणी चीन सागर से मलक्का स्ट्रेट होकर हिंद महासागर तक और उसके भी पार अरब की खाड़ी तक करने का प्रयास कर रहा है। एक विचार यह भी व्यक्त किया जा रहा है कि इस भू–राजनीतिक रणनीति का उद्भव इस कारण हुआ क्योंकि चीन अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए मध्य पूर्व तथा केंन्द्रिय एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका पर निर्भर है, अतः ऊर्जा आपूर्ति के मार्ग की सुरक्षा के लिए और अपने समुद्री व्यापार की सुरक्षा के लिए वह अपनी इस महत्त्वाकांक्षी नीति के अनुसार शक्ति एवं प्रभाव का विस्तार कर रहा है।[10] **'मोतियों की माला'** का प्रत्येक मोती चीन भू–राजनीतिक प्रभाव के विस्तार के लिए किए गए विभिन्न देशों के साथ प्रत्येक गठबंधन को दर्शाता है अथवा चीन के द्वारा एशिया में विभिन्न स्थानों पर उपस्थित उसके सैन्य गठबंधन तथा सैन्य बेस को दर्शाता है। अथार्त् जहाँ–जहाँ पर उसने सैन्य गठबंधन तथा सैन्य बेस बनाये हैं, उन्हें मोती के नाम से संबोधित किया जा रहा है अथवा उनमें से प्रत्येक को एक–एक मोती माना जा रहा है।[11] उदाहरणस्वरूप हाल ही में चीन ने **'हैन्न द्वीप'** पर अपनी सैन्य सुविधाओं का विस्तार किया है, जोकि अब वह इसका मोती बन गया है। उसी तरह **'बुडी द्वीप'** में हवाई पट्टी का आधुनिकीकरण किया गया है, यह द्वीप भी इसका एक मोती है।[12]

हाल ही में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आए थे। जहां उन्होंने तमिलनाडु के महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) में भारतीय प्रधानमंत्री के साथ एक अनौपचारिक वार्ता में हिस्सा लिया। उल्लेखनीय है कि इस प्रकार की अनौपचारिक वार्ताओं की शुरूआत वर्ष 2018 में हुई थी और ये दोनों प्रतिनिधियों को द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक महत्व के अतिव्यापी मुद्दों पर चर्चा जारी रखने का अवसर प्रदान करती है।[13]

वर्ष 2020–21 में चीन के नागरिक मामलों के मंत्रालय ने भारत के अरूणाचल प्रदेश राज्य के 15 स्थनों को नवीन नाम स्टैंडडाईज्ड किया है। चीन के नागरिक मामलों के मंत्रालय द्वारा यह कार्य चीन संसद द्वारा नवीन सीमा कानून पारित करने के उपरान्त किया गया है। इस प्रकार चीन का नवीन सीमा कानून भारत चीन के मध्य बढ़ रहे तनाव को और अधिक बढ़ा सकता है।[14]

निष्कर्षः– दक्षिण एशिया मे विशेषकर भारतीय संदर्भ में चीन की इस नीति के विस्तार का अवलोकन किया जाए तो यह विदित होता है कि चीन एक दीर्घकालीन नीति के अंग के रूप में भारत के अभिन्न पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों का विस्तार करता जा रहा है। उसने इन सभी देशों के साथ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय सैन्य गठबंधन, आर्थिक एवं व्यापारिक समझौता कर लिये है। ये देश अपने हित–लाभ को देखते हुए अब चीन के साथ संबंधों के विस्तार को ज्यादा महत्व दे रहे है। भारत के लिए यह एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है। वस्तुतः चीनी नीति से उसकी मंशा स्पष्ट दिखाई दे रही है कि वह भारत को चारों तरफ से घेरकर उसे अपनी हद में बांध देना चाहता है तथा भारत को दक्षिण एशिया से बाहर नहीं निकलने देना चाहता है। भारत तथा चीन संबंधों में तनाव तथा अवसर दोनों है। वर्तमान समय में चीन की आंतरिक राजनीति तथा कोरोना प्रभाव के फलस्वरूप चीन से कंपनियों का पलायन हो रहा है यह पलायन भारत अथवा वियतनाम में स्थापित हो सकता है। भारत को ऐसे समय में तनाव से बचकर परिस्थिति का लाभ उठाना चाहिए। परन्तु यदि चीन द्वारा अपने कानून को आधार मानकर भारतीय सम्प्रभुता का अतिक्रमण किया जाएगा तो ऐसे में भारत को उचित प्रत्युत्तर देने हेतु तैयार रहना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. माधव. राम, ''असहज पड़ोसी'', प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2015 पृ. 173
2. द हिन्दू – 25 जुलाई 2017
3. वर्ल्ड फोक्स, जुलाई, 2013
4. कोड़ापल्ली श्रीकांत, ''संयत तामेल : 2011–2012 में भारत चीन संबंध'', वर्ल्ड फोकस, जुलाई–2013, पृ. 4,5
5. पांडा. स्नेहलता, ''उभयमुख भारत– चीन संबंध ; विश्वास की कमी की मिशाल,'' नई दिल्ली, मार्च 2014 पृ. 31

6. सिंह. स्वर्ण; ''संकल्प धरातल पर लाने की चुनौती'' राजस्थान पत्रिका, 6 सित. 2017
7. सिंह. रामविजय, ''भारत–चीन संबंध'', एक संवाद राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015 पृ. 123,124
8. वैदिक. वेद. प्रकाश, ''चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत'' हिन्दुस्तान टाईम्स, 16 मई 2015
9. पाठक. कविता, ''अब चीन की बारी!'' राजस्थान पत्रिका, 5 सितम्बर 2017
10. रानाडे. जयदेवा, ''दक्षिण चीन सागर में चीन के हित'' वर्ल्ड फोकस, नई दिल्ली, दिसंबर, 2016
11. कुमार. राजेश, ''भारत चीन; सामुदिक राजनयिक संलग्नता गतिकी, वर्ल्ड फोकस , दिसम्बर, 2016 पृ. 52,53
12. प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2021
13. डॉ. संजय कुमार शर्मा, भारत–चीन संबंध बलता परिदृश्य, Evincepub Publishing पृ. 232
14. दा हिन्दू जून 2021